International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070
www.socialresearchjournals.com
Volume 1; Issue 2; December 2015; Page No. 144-146

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में हरियाणा का योगदानः एक अवलोकन

जितेन्द्र आर्य

शोधार्थी एम.फिल. महर्शि दयानन्द यूनिवर्सिटी, रोहतक, हरियाणा, भारत

प्रस्तावना

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में हरियाणा के लोगों की भागीदारी को बहुत ही सीमित माना जाता है और अक्सर यह कहा जाता है कि यहाँ के लोगों ने अवज्ञा आन्दोलन में कोई खास योगदान नहीं दिया। लेकिन यह बात बिल्कुल निराधार है। उस समय हरियाणा के लोग पंजाब, दिल्ली की अपेक्षा कम पढ़े लिखे और पिछड़े थे लेकिन उन्होंने अवज्ञा आन्दोलन में अपनी क्षमता से बढ़कर हिस्सेदारी के साथ ही अन्य जगहों पर जाकर भी इस अवज्ञा आन्दोलन में अपनी आहुति दी।

कांग्रेस ने 31 दिसम्बर 1929 को पूर्ण स्वतन्त्रता का लक्ष्य घोशित कर 26 जनवरी 1930 को भारत का पहला स्वतन्त्रता दिवस मनाया। इस स्वतन्त्रता के लिए संघर्श करने की शपथ पढी गई।[1] गाँधी जी जन आंदोलन को माने हुए विषेशज्ञ थे इसलिए 1930 की मध्य फरवरी में साबरमती आश्रम में कांग्रेस कार्यकारिणी समिति की बैठक हुई जिसमें गाँधी जी को इस बात का अधिकार दिया गया कि वे अपनी इच्छा से जब और जिस जगह चाहे, सविनय अवज्ञा आन्दोलन का शुभारंभ कर सकते है। 31 जनवरी को गाँधी जी ने चेतावनी भरा मांग पत्र जिसमें 11 मांगें भी वायसराय को भेजी लेकिन लार्ड इरविन ने इन्हे अनदेखा कर दिया इसलिए अब सिर्फ सविनय अवज्ञा का रास्ता ही बचा था।[2]

गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन को शुरू करने के लिए नमक कानून तोडने की योजना बनाई। सारा कार्य इस प्रकार निश्चित हुआः यह कानून गाँधी जी स्वयं तोड़ेगें। वे साबरमती से 79 कार्यकर्ताओं के साथ 241 मील पैदल चलकर डांडी नामक स्थान पर जाकर सविनय अवज्ञा आन्दोलन में पहली आहुति डालेगें तत्पश्चात समूचा देश अवज्ञा आन्दोलन में उतर जाएगा। 12 मार्च 1930 को महात्माजी ने साबरमती आश्रम से अपनी ऐतिहासिक डांडी यात्रा आरम्भ की और 5 अप्रैल को गांधी जी डांडी पहुँचे। उन्होंने रात को व्रत रखा और 6 अप्रैल को समुद्र तट पर नमक बनाकर कानून तोड़ा ऐसा करते ही समूचे भारत के साथ हरियाणावासी भी इस जन आंदोलन में कूद पडे।[3]

यह हरियाणा का इतिहास है। सविनय अवज्ञा आन्दोलन ने हरियाणा के लोगों में राजनैतिक चेतना जागृत कर दी। अब हरियाणा में कांग्रेस का जन आधार बढ़ा और लोग सत्याग्रह करने और जेल जाने को अधिक संख्या में तत्पर रहने लगे। भगत सिंह और लाला लाजपतराय के बलिदान ने हरियाणा की यूवा पीढी में पहले ही ब्रितानी राज के प्रति नफरत भर दी। सविनय अवज्ञा आन्दोलन का सर्वप्रथम प्रभाव रोहतक पर पड़ा इसके बाद यह आन्दोलन हिसार–करनाल–गुड़गाँव–रेवाड़ी–अम्बाला इत्यादि सभी जगह फैल गया।[4]

रोहतक कांग्रेस के सदस्यों ने झज्जर तहसील के जाहिदपुर गाँव में जोकि रोहतक से 30 मील दूर था, नमक बनाने का निश्चय किया। यहाँ पानी अत्यधिक खारा होने के कारण ब्रिटिश काल से पहले लोग कुओं के पानी से नमक बनाते थे। राव मंगली राम जोकि रोहतक कांग्रेस के सदस्य थे, ने 5 रुपये में एक कुआं सीताराम से किराए पर लिया। लेकिन सरकार के एक सहयोगी रणधीर सिंह ने वहीं कुआँ 15 रुपये में किराए पर ले लिया और कांग्रेस का नमक बनाने का यह प्लान असफल हो गया और इस योजना को बनाने वाले लाला श्यामलाल को कोर्ट ने गिरफ्तार कर लिया जिसे उन्होंने अपने जीवन का सबसे प्रसन्नता का दिन बताया। रोहतक में जलीयावाला बाग हत्याकांड के विरोध में हड़ताल का आयोजन किया गया। 10 अप्रैल को रोहतक के मौहल्ला कलालान में मन्दिर के पास एक कुएं से पानी लेकर नमक बनाया गया। पुलिस खड़ी–खड़ी कानूशकनी का ड्रामा देखती रही लेकिन किसी पर हाथ डालने की हिम्मत न हुई। शाम को अनाज मंडी में जलसा हुआ। गाँधी जी द्वारा भेजे गए अम्बाला के सूरजभान ने जलसे की अध्यक्षता की। वह अपने साथ दिल्ली से नमक लाया था। जिसकी निलामी से 100 रुपये मिले। झज्जर, बेरी, सांधी और अन्य जगहों पर भी नमक बना और सविनय अवज्ञा का प्रभाव रहा। 11 अप्रैल को श्रीराम शर्मा, राव मंगली राम ने जाहिदपुर को छोड़कर रोहतक से पाँच मील दूर सूनारी गाँव में जलसे का आयोजन करने की ठानी लेकिन बाद में वे रतौली पहुँचे जहाँ श्रीराम शर्मा को सभा सम्बोधित करते हुए गिरफ्तार किया गया। अब कांग्रेस के जूझारू सदस्यों ने हार न मानते हुए झज्जर में 12 अप्रैल को सभा की जिसमें दस हजार के लगभग लोगों ने भाग लिया। जब कांग्रेस सदस्य सविनय अवज्ञा को सफल बनाने का प्रयास कर रहे थे तब अंग्रेजी सरकार ने कांग्रेस के प्रोपगण्डा को विफल बनाने के लिए प्रशासन और कांग्रेस विरोधियों का साथ लिया। चौ0 छोटूराम, चौ0 टीकाराम, चौ0 अभय राम, कैप्टन दलपत सिंह, लेक0 रणधीर सिंह इत्यादि ने कांग्रेस के प्रायोजन को विफल करने के लिए हर प्रकार के हथकण्डे अपनाए। जब कांग्रेस सम्मेलन का आयोजन कर रही थी तब जमीदार लीग पड़ोस के गाँव में रेसलींग का आयोजन कर रही थी ताकि लोग कांग्रेस के आयोजन में न जा सके।[5]

कांग्रेस कमेटी रेवाड़ी ने 20 अप्रैल को खारे पानी से नमक बनाकर कानून तोड़ा। बड़ी कठिनाई से यहाँ एक छंटाक नमक बना जिसे बाद में 1040 रुपये में निलाम कर दिया गया। एक 12 वर्शीय लड़के ने भी निलामी में नमक खरीदा। 23 अप्रैल को रेवाड़ी नगर में एक शानदान सभा का आयोजन हुआ। जिसमें गाँधी जी के प्रतिनिधि खड़ग बहादुर और पं0 नेकीराम शर्मा ने स्वदेशी पर भाशण दिए और लोगों को सरकार का विरोध करने के लिए प्रेरित किया।[6]

जून के महीने में रोहतक से 21 स्वंय सेवकों का एक जत्था सूरत के लिए गाँधी जी के साथ नमक सत्याग्रह के लिया गया। 26 स्वयं सेवकों का जत्था उसी महीने पेशावर के लिए रवाना हुआ। जत्थे के स्वयं सेवक जब गाँव–गाँव होकर पद यात्रा करते जा रहे थे तो उन्हें मार्ग में गिरफ्तार कर लिया गया।[7]

हिसार जिले में भिवानी संघर्श का मुख्य केन्द्र बना। यहाँ पर पं0 नेकीराम और श्री के0ए0 देसाई ने आन्दोलन की अगुवाई की उन्हें ठाकुर शिवपाल सिंह तथा दूसरे उत्साही स्वयं सेवक पूरा सहयोग दे रहे थे। इस अवसर पर एक प्रसिद्ध क्रांतिकारी खड़ग बहादुर जिन्होंने गाँधी जी के कहने पर अहिंसा का मार्ग अपनाया था की

भिवानी में नमक सत्याग्रह को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा था। 13 अप्रैल को नमक बनाने का कार्यक्रम निश्चित हुआ इससे पहले मीताथल, धनाना, हांसी, सिरसा जैसे स्थानों से आए स्वयंसेवको के साथ मिलकर भारी प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन के प्रारम्भ में खद्दर पहने हुए एक कन्या ने सभी स्वयंसेवकों को तिलक लगाया।[8]

13 अप्रैल को 5000 लोगों ने इकट्ठा होकर पं0 नेकीराम के नेतृत्व में लगभग 3/4 पौंड नमक बनाया जिसे 250 रु0 में बेचा गया। 27 अप्रैल को हिसार में 1000 लोगों ने सभा की और नमक कानून तोड़ा। इसी तरह सिरसा, फतेहाबाद, हांसी में लोगों ने नमक बनाकर आन्दोलन में अपनी आहुति दी।[9]

इस आन्दोलन में अम्बाला शहर सबसे आगे रहा। अम्बाला में लाल दुनीचन्द की पुत्री विधावती ने सात स्त्रियों को लेकर भारी जन समूह के सामने बड़ी बहादुरी से नमक बनाया। इसी प्रकार करनाल जिले में करनाल, शाहाबाद, लाडवा, थानेसर, पुंडरी में नमक बनाया गया और सार्वजनिक सभा की गई जिसमें स्थानीय नेताओं ने सरकार विरोधी भाशण दिए।[10]

विदेशी वस्त्रों का बहिश्कार भी सविनय अवज्ञा आन्दोलन के कार्यक्रम का हिस्सा था। समूचे हरियाणा में विदशी वस्त्रों के बहिश्कार के लिए 17 मार्च का दिन निश्चित हुआ। मदन मोहन मालवीय, गोपीचन्द भार्गव, नेकीराम शर्मा, सूरजभान और अब्दुलगफ्फार खां इत्यादि नेताओं ने विदेशी कपड़े के बहिश्कार के प्रोग्राम को लोकप्रिय बनाने के लिए हरियाणा भर का दौरा किया। अनेक स्थानों पर विदेशी कपड़ो की होली जलाई गई। सर्वप्रथम कांग्रेस स्वयं सेवकों ने उन दुकानों पर धरना दिया जो विदेशी वस्त्र बेचते थे। परिणामस्वरूप अम्बाला, रोहतक, भिवानी के व्यापारियों ने विदेशी कपड़े का व्यापार न करने का वायदा किया। अम्बाला में स्त्रियों ने मन्दिरों पर धरना दिया और केवल खद्दरधारियों को अन्दर जाने दिया। अम्बाला जिले में लगभग 5000 लोगों ने केवल खादी पहनने की शपथ ली। इसी तरह कांग्रेस वॉलेन्टीयरस ने शराब की दुकानों पर भी पिकेटिंग की। इसके दो उद्देश्य थे एक तो इससे नशीले द्रव्य की खपत कम करना और दूसरा सरकारी आबकारी में कमी करना था। कई स्थानों पर तो शराब खरीदने वालों को गधे पर बैठाकर, काला मुहं करके जूतों की माला पहनाकर जबरदस्ती शहर की गलियों व बाजारों में घुमाया गया। कांग्रेस स्वयं सेवकों ने 1 मई को रोहतक में शराब की दुकानों पर धरना दिया। परिणामस्वरूप शहर में शराब की बिक्री कम हो गई। अम्बाला में भी ऐसा ही किया गया और अम्बाला के निकट एक गाँव बाबयल में शराब ठेकेदार का सामाजिक बहिश्कार किया गया और 8 अगस्त को भीड़ ने उसके घर को घेर लिया। सफाई वाले ने इसके घर में सफाई करने से इन्कार कर दिया।[11]

शिक्षण संस्थानों में भी बहिश्कार का प्रभाव पड़ा और छात्र–छात्राओं ने अलग–अलग जगहों पर भिन्न–भिन्न तरिके अपनाकर अवज्ञा आन्दोलन को लोकप्रिय बनाया। रेवाड़ी के अहीर हाई स्कूल के छात्रों ने शराब की दुकानों की पिकेटिंग करने में और विदेशी माल की होली जलाने में सक्रिय भाग लिया। गुड़गाँव के जिलाधीश खुर्शीद मुहम्मद ने स्कूल के प्रधान राव बहादुर कप्तान बलबीर सिंह को इस बात से रूश्ट होकर पत्र लिखा और हैडमास्टर से कहा गया कि इन विद्यार्थियों से माफी मांगने के लिए कहें लेकिन जब इसका कोई परिणाम नहीं निकला तो लोगों पर सख्ती की गई। महाष्य भगवान दास आदि 14 लोगों को और स्कूल के दो विद्यार्थियों को गिरफ्तार कर लिया गया।[12]

रोहतक में वैष्य और गौड स्कूल के छात्रों ने आन्दोलन की सफलता के लिए खूब काम किया। हिसार के एक मनचले छात्र मदनलाल पुत्र बिहारी लाल ने एक कुम्हार से एक गधा किराए पर लिया और उसके अगले और पिछले पैरों में अंग्रेजी कपड़े की बनी दो पतलूने पहना दी। सिर पर एक हैट बांध दी, गले में टाई लटका दी, पीठ पर विदेशी कपड़े का कोट सजा दिया और आंखों पर चश्मा पहना दिया। इस अंग्रेज की अगुवाआई में 07 अप्रैल 1930 को गांधी जी की गिरफ्तारी के विरूद्ध जुलुस निकाला गया। भिवानी के भी छात्रों ने नमक बनाया, पिकेटिंग में हिस्सा लिया। हिसार के चन्दूलाल एंग्लो वैदिक स्कूल के 150 छात्रों ने सरकार की कडी चेतावनी के बावजूद सरकार विरोधी जुलुसों में भाग लिया। उनकी देखा देखी सरकारी स्कूल के 17 छात्र भी उनसे आ मिले।

शाहबाद के डी.ए.वी. स्कूल के छात्रों ने भी खूब काम किया उन्होंने नमक मिली मिट्टी से स्कूल के प्रांगण में नमक बनाकर जालिम अंग्रेजी सरकार के कानून के चिथड़े – चिथड़े कर दिए। इसके बाद सड़क पर जुलुस निकाला। जुलुस के आगे 12–13 वर्श का पांचवी कक्षा का छात्र राजेन्द्र सिंह तिरंगा झंडा लेकर चल रहा था। वह शाहाबाद के पुलिस अधिकारी विचित्र सिंह का पुत्र था। पुलिस ने लड़के से झंडा छीन लिया लेकिन झंडाविहिन बालक ने अंग्रेजी सरकार मुर्दाबाद, जालिम पुलिस मुर्दाबाद, महात्मा गाँधी की जय के नारे लगाए। स्कूल के छात्रों ने गाँव जाकर किसानों को कर ने देने और नमक कानून तोड़ने के लिए प्रेरित किया। लड़कों की देखा–देखी स्थानीय डी.ए.वी. कन्या स्कूल की लड़कियाँ भी भड़क उठी। उन्होंने जुलुस निकालकर जनता से सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सहयोग करने की अपील की। थानेश्वर के जठलाना के निम्न माध्यमिक स्कूल की छात्राओं ने 20–21 मई को हैडमास्टर के मना करने के बावजूद झंडा लेकर जुलुस निकाला। लाडवा के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड स्कूल के छात्रों ने देशभक्त अध्यापक नरसिंह दास से प्रोत्साहित होकर अवज्ञा आन्दोलन को बढ़ावा दिया। डी.ए.वी. करनाल, पानीपत के जैन स्कूल एवं बालकराय स्कूल के विद्यार्थियों ने भी ऐसा ही किया।[13]

इसके अतिरिक्त कीर्ति किसान सभा ने भी सभा का आयोजन कर जमीदारों के शोशण के विरूद्ध कृशकों को जागरूक किया। स्कीनर स्टेट में कृशकों पर अत्यधिक कर लगाए गए थे इसी प्रकार छुछकवास में अहीर जाट किसान जमीदारों से पीडित थे। के.ए. देसाई जैसे नेताओं ने लाल झंडे के नीचे किसानों को एकजूट कर उन्हें राहत दिलाने के लिए संघर्श किया।[14]

सरकार ने दमन और डिवाइड एंड रूल की नीति अपनाकर आन्दोलन को कुचलने का प्रयास किया। कांग्रेस को अवैध घोशित कर दिया। बड़े–बड़े भूमिपतियों ठेकेदारों मानपत्र युक्त सम्मानित व्यक्तियों को लेकर अमन सभाओं का गठन किया। अकाल सहायता और तकावी के बहाने लोगों के मन में कांग्रेस विरोधी भाव उत्पन्न करने की चेश्टा की।[15]

सरकार ने सैकड़ां कांग्रेस कार्यकर्ताओं को जेल में डाल दिया। यह दमन 5 मार्च 1931 को गाँधी इरविन समझौते के साथ समाप्त हो गया। राजनीतिक कैदियों को रिहा किया गया। कांग्रेस के नेता नायक की तरह अपने घर लोटे। ब्रिटिश भारत सरकार ने कुछ ही दिनों में समझौते की शर्तो का उल्लघन करना शुरू कर दिया। पुलिस के अत्याचार बढ गए। हिसार मे आयकर व अन्य कर अत्यधीक बढ़ा दिए। जिसकी गोपी चन्द भार्गव ने कड़ी आलोचना की। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में गाँधी जी खाली हाथ लोटे।[16] और 4 जनवरी 1932 को दोबार सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। सरकार ने कड़ा रूख अपनाकर महात्मा गाँधी, सरदार पटेल और अन्य महत्वपूर्ण नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। इसका हरियाणा में कड़ा प्रतिरोध हुआ।[17]

रोहतक में 180 लोगों ने गिरफ्तारियाँ दी। लगभग 80 सत्याग्रही हिसार में गिरफ्तार हुए। 40 के लगभग अम्बाला और लगभग इतने ही करनाल–गुड़गाँवा में गिरफ्तार हुए पुलिस ने भी बड़े अत्याचार किए। 10 जनवरी 1932 को जब रोहतक शहर में स्वतन्त्रता दिवस मनाने हेतु लोगों का जुलुस निकाला तो पुलिस ने अन्धाधुन्ध

लाठीचार्ज कर दिया। 17 जनवरी की शान्तिपूर्ण तरीके से धरना दे रहे वालटियरों को पिटा। फिर 29 जनवरी को पेशावर दिवस मनाते लोगों पर पुलिस ने धावा बोल दिया। जब आन्दोलन जोरों पर था। गाँधी जी ने साम्प्रदायिक पंचाट के विरूद्ध जेल में ही आमरण अनशन पर बैठ गए और 26 सित्मबर को बात मान लेने पर गांधी जी ने व्रत तोड़ दिया। इसके बाद गाँधी जी की रूचि छुआछुत समाप्त करने में अधिक हो गई और उन्होंने आन्दोलन को स्थगित कर आत्म शुद्धि व्रत किया। 14 जुलाई 1933 को गाँधी जी ने सत्याग्रह को पुनः चालू किया। लेकिन बदले हुए स्वरूप में इस बार सत्याग्रह आन्दोलन व्यक्तिगत सत्याग्रह था। यह हरियाणा में पूर्ववत् सफल न हो पाया। अन्य जगहों की भांति आन्दोलन ठप सा पड़ गया। जैसे निम्न आंकड़ों से स्पश्ट होता हैः– 1932 में 1197 गिरफ्तारियाँ, 1933 में 175, 1934 में 10। गाँधी जी ने स्थिति को भापते हुए 7 अप्रैल को आन्दोलन समाप्त कर दिया।[18]

इस प्रकार सविनय अवज्ञा आन्दोलन में हरियाणा की भागीदारी कम रही सही नहीं लगती। किन्तु यह अवश्य है कि जिस प्रकार किसान और भूमिहीन कृशकों को सरकार और उनके वफादार जमीदारों के विरूद्ध जागरूक कर नागरिक अवज्ञा आन्दोलन में सहयोग प्राप्त कर सकते थे वह पूर्ण रूप से नहीं हो पाया, क्योंकि सरकार ने जमीदारों से मीलकर एण्टी कांग्रेस प्रोपगेण्डा किया और हरियाणा के भोलेभाले कृशक उनकी चाल को समझ नहीं पाए फिर भी अपेक्षा से अधिक हरियाणा के लोगों ने इस आन्दोलन में अपनी आहुति देकर इसे सफल बनाने का प्रयास किया।

संदर्भ सूची

1. शुक्ल, रामलखन, आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यन्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय 2010, पृ0 671
2. चन्द्र, विपिन, भारत का स्वतन्त्रता संघर्श, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय 2011, पृ0 253
3. चादव, के.सी., हरियाणा का इतिहास आदिकाल से 1966 तक, होप इंडिया पब्लिकेशन, गुड़गाँव–2012, पृ0 475
4. Singh, Parduman, Shukla, S.P., Freedom Struggle in Haryana & The Indian National Congress i`0 87
5. Ibid, i`0 88
6. यादव, के.सी., अहीरवाल इतिहास एंव संस्कृति, हरियाणा हिस्टारिकल सोसायटी, गुड़गाँव–2000, पृ0 118
7. प्रभाकर, देवीशंकर, स्वाधीनता संग्राम और हरियाणा, उमेश प्रकाशन, दिल्ली–1976, पृ0 203
8. वहीं, 202
9. Yadav, K.C., Modern Haryana History and Culture, Manohar Publishers – Delhi. 2002ए पृ0 177
10. यादव, के.सी., हरियाणा का इतिहास, होप इंडिया पब्लिकेशन गुड़गाँव– 2012, पृ0 478
11. Chandra, Jagdish, Feedom Struggle in Haryana 1919-1947, Vishal Publications Kurukshetra. 1982ए पृ0–89–90
12. यादव, के.सी., अहीरवाल का इतिहास एवं संस्कृति। हरियाणा हिस्टोरिकल सोसायटी, गुड़गाँव–2000, पृ0–118–119
13. यादव, के.सी. हरियाणा का इतिहास, होप इंडिया पब्लिकेशन, गुड़गाँव–2012, पृ0 479–80
14. Singh Parduman, Shukla, S.P., Freedom Struggle in Haryana and The Indian National Congress, पृ0 96
15. Chandra, Jagdish, Feedom Struggle in Haryana 1919-1947, Vishal Publishers Kurukshetra.1982ए पृ0 93
16. Singh Parduman, Shukla, S.P., Freedom Struggle in Haryana and The Indian National Congress, पृ0 97
17. Ibid, पृ0 88
18. यादव, के.सी. हरियाणा का इतिहास, होप इंडिया पब्लिकेशन, गुड़गाँव–2012, पृ0 485